B.A III, VI
M.A. John

सर्वोदय (Sarvodaya)

सर्वोदय का अर्थ सबका उदय, सबका विकास, तथा सबकी प्रगति है। भारतीय ग्रामीण पुनः निर्माण के लिये सर्वोदय का विचार महात्मा गाँधी ने प्रस्तुत किया। सर्वोदय कोई योजना नहीं है बल्कि यह एक ऐसी पद्धति है जिसके द्वारा सभी के विकास और अभ्युदय पर बल दिया गया है। यह एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें सभी को स्वतन्त्रता और समानता का अधिकार दिया गया है। इसकी कुछ महत्वपूर्ण विशेषतायें इस प्रकार है।

(1) Family sentiments (कौटुम्बिक भावना) सर्वोदय सम्पूर्ण समाज को एक परिवार के रूप में देखता है। यह एक ऐसे समाज की स्थापना करना चाहता है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति दूसरों की सेवा और हित पूर्ति को अपना नैतिक कर्तव्य समझेगा।

(2) Stateless Society (राज्य विहीन समाज) इसका उद्देश्य एक ऐसे समाज की स्थापना करना है जिसमें व्यक्ति का किसी भी प्रकार से शोषण न किया जाये

(3) दलीय पद्धति पर आधारित प्रजातन्त्र का विरोध (Against Democracy based on party system) सर्वोदय का उद्देश्य दलीय व्यवस्थाओं को समाप्त करके निर्दलीय व्यवस्था पर आधारित सच्चे लोकतन्त्र की स्थापना करना है।

Scanned with CamScanner

4. सत्ता का विकेन्द्रीकरण (Decentralization of power) यह व्यवस्था राजनैतिक और आर्थिक शक्ति के विकेन्द्रीकरण का समर्थन करती है अर्थात स्थानीय संस्थाओं को अधिक से अधिक स्वायत्ता देकर स्वायत्त शासन की स्थापना करना है।

5- समताकारी आर्थिक व्यवस्था (Egalitarian Economic System) सर्वोदय एक ऐसी आर्थिक व्यवस्था की स्थापना चाहता है जिसमें सभी व्यक्ति को समान सुविधाएं प्राप्त हों तथा आर्थिक क्षेत्र में सभी को न्याय प्राप्त हो। अर्थात प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता और क्षमता के अनुसार कार्य करे तथा आवश्यकता के अनुसार पुरस्कार प्राप्त करे।

6- नैतिक शिक्षा (Utilitarian and moral Education) शिक्षा तथा नयी उपयोगी होनी जब इसमें नैतिकता, चरित्र निर्माण तथा शारीरिक श्रम का समन्वय हो। शिक्षा व्यक्ति की परिस्थितियों तथा उसके व्यवसाय के अनुकूल होनी चाहिये।

7- धर्म का महत्व (Importance of Religion) सर्वोदय सामाजिक पुनः निर्माण के लिये धर्म को एक महत्वपूर्ण आधार मानता है परन्तु धर्म का मानवीय मूल्यों के विकास तथा कर्तव्य परायणता में वृद्धि से है।

8- क्रमिक प्रक्रिया (A Gradual process): सर्वोदय विकास की एक ऐसी क्रमिक प्रक्रिया है जिसमें अनेक चरणों के द्वारा सर्वोदयी समाज की

स्थापना की जाती है।

उपरोक्त विशेषताओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि Sarvodaya का उद्देश्य अर्थात् आदर्श यह है कि केवल अपनी नहीं बल्कि दूसरों के लिये जियो।

सर्वोदय के आधार :—

(1) अध्यात्म विद्या
(2) सत्य
(3) अहिंसा
(4) अस्तेय
(5) च अपरिग्रह
(6) ब्रह्मचर्य
(7) शारीरिक श्रम
(8) अस्वाद
(9) स्वदेशी
(10) अस्पृश्यता निवारण
(11) सर्व धर्म समानत्व
(12) भूदान आन्दोलन
(13) सम्पत्ति दान

Scanned with CamScanner